http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2024) वर्ष 4, अंक 6, 20-22

Article ID: 373

करौंदा (*कैरिसा कैरेंडस*) आधारित कृषि वानिकी प्रणालियों से किसानों को लाभ

अरविन्द कुमार त्रिपाठी[1]
रमेश कुमार यादव[2] **श्रीकांत**[3]
रिचा तिवारी[4]

सिल्विकल्चर और कृषिवानिकी विभाग
सहायक प्राध्यापक, एस. आर. सी. पी. एस. बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उत्तर प्रदेश)

करौंदा (*कैरिसा कैरेंडस*) एक महत्वपूर्ण फल है जो भारत के कई हिस्सों में पाया जाता है। इसे कृषि वानिकी प्रणाली में सफलतापूर्वक शामिल किया जा सकता है। यह वृक्ष भारत में राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, उत्तर प्रदेश और हिमालय के क्षेत्रों में पाया जाता है। इसका वृक्ष 2-4 मी. ऊँचा व कांटे दार होता है। पत्रों के पास मजबूत काटे होते हैं। इसके फल गोल, छोटे और हरे रंग के होते हैं। कच्चे फल सफेद व लालिमा सहित होते हैं। पकने पर यह काले रंग के हो जाते हैं। फल के अन्दर चार बीज होते हैं। इसका स्वाद खट्टा होता है।

करौंदा आधारित कृषि **वानिकी प्रणाली की कृषि पद्धतियाँ**

करौंदा एक महत्वपूर्ण फल है, जो अपनी सूखा-सहिष्णुता, औषधीय गुणों और विभिन्न खाद्य उत्पादों में उपयोग के कारण भारत के विभिन्न क्षेत्रों में लोकप्रिय है। करौंदा को एग्रोफोरेस्ट्री प्रणाली में शामिल करने से न केवल भूमि की उत्पादकता बढ़ती है, बल्कि किसानों को आय के नए स्रोत भी मिलते हैं। करौंदा आधारित एग्रोफोरेस्ट्री प्रणाली की सफल स्थापना के लिए उचित कृषि पद्धतियों का पालन करना आवश्यक है।

1. जलवायु और मृदा की आवश्यकताएँ: करौंदा एक सूखा-सहिष्णु पौधा है, जो 400-600 मिमी वर्षा वाले क्षेत्रों में अच्छी तरह से उगता है। इसे सभी प्रकार की मिट्टियों में उगाया जा सकता है, लेकिन यह रेतीली, दोमट और हल्की क्षारीय मिट्टी में सर्वाधिक फलता-फूलता है। मिट्टी का पीएच 6.5-7.5 के बीच होना आदर्श होता है।

2. नर्सरी स्थापना और पौध रोपण: करौंदा के पौधों को बीज, कटिंग या ग्राफ्टिंग द्वारा तैयार किया जा सकता है। नर्सरी में बीजों को 1-2 सेंटीमीटर गहराई पर बोया जाता है और इसे 4-5 महीने तक बढ़ने दिया जाता है। 4-6 महीने की उम्र के पौधों को खेत में रोपण के लिए उपयुक्त माना जाता है। पौधों को 2.5-3 मीटर की दूरी पर रोपा जाता है, ताकि उन्हें पर्याप्त स्थान मिल सके।

3. सिंचाई और पोषण प्रबंधन: करौंदा को बहुत अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती, लेकिन गर्मियों में 15-20 दिनों के अंतराल पर हल्की सिंचाई की जा सकती है। खाद और उर्वरकों का उपयोग पौधों की आवश्यकताओं के अनुसार किया जाना चाहिए। प्रारंभिक अवस्था में नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश (NPK) का अनुपात 60:40:40 ग्राम प्रति पौधा दिया जा सकता है।

4. छंटाई और प्रशिक्षण: करौंदा के पौधों की छंटाई और प्रशिक्षण आवश्यक होता है ताकि पौधों को अच्छा आकार मिल सके और उनका वायुसंचार बेहतर हो सके। प्रारंभिक अवस्था में पौधों की छंटाई करने से उनकी वृद्धि में तेजी आती है और फल उत्पादन में सुधार होता है।

5. फसल सुरक्षा: करौंदा पर कीट और बीमारियों का प्रकोप कम होता है, लेकिन पत्तियों और फलों को नुकसान पहुंचाने वाले कीटों से बचाव के लिए कीटनाशकों का प्रयोग किया जा सकता है। रोगों के प्रबंधन के लिए जैविक उपायों का उपयोग करने की सलाह दी जाती है।

6. कटाई और प्रसंस्करण: करौंदा के फलों को उनकी

e-ISSN: 2583 - 0430

परिपक्वता के समय हाथ से तोड़कर एकत्र किया जाता है। फलों को सीधे बाजार में बेचने के साथ-साथ उनके प्रसंस्करण के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है, जैसे कि अचार, जैम और जेली बनाने के लिए।

7. अन्य फसलों का संयोजन: करौंदा आधारित एग्रोफोरेस्ट्री प्रणाली में अन्य फसलों को भी जोड़ा जा सकता है, जैसे दालें, अनाज, सब्जियाँ और औषधीय पौधे। यह संयोजन न केवल भूमि की उत्पादकता बढ़ाता है, बल्कि किसानों को विविधता प्रदान करता है।

करौंदा आधारित कृषि वानिकी प्रणाली के लाभ:

1. **आर्थिक लाभ:** करौंदा का फल विभिन्न खाद्य उत्पादों जैसे अचार, जैम, जेली और पेय पदार्थों में उपयोग किया जाता है, जो बाजार में उच्च मांग रखते हैं। इसके अलावा, करौंदा की पत्तियों और जड़ों का औषधीय महत्व भी है, जिससे किसान अतिरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं।
2. **पर्यावरणीय लाभ:** करौंदा के पौधे की जड़ें मिट्टी के कटाव को रोकने में सहायक होती हैं और मृदा स्वास्थ्य में सुधार करती हैं। यह पौधा नाइट्रोजन-स्थिरीकरण में भी सहायक है, जिससे मृदा की उर्वरता बनी रहती है। करौंदा का पौधा सूखा सहिष्णु होता है, जिससे यह जल की कमी वाले क्षेत्रों के लिए आदर्श है।
3. **फसल विविधता:** करौंदा आधारित कृषि वानिकी प्रणाली में अन्य फसलों को भी शामिल किया जा सकता है, जिससे किसानों को विविधता मिलती है और उनके उत्पादन की जोखिम कम होती है।
4. **सतत कृषि:** करौंदा के पौधों के साथ अन्य फसलों का संयोजन करके, एक सतत कृषि प्रणाली विकसित की जा सकती है जो पर्यावरण के अनुकूल होती है और दीर्घकालिक उत्पादन सुनिश्चित करती है।

औषधीय गुण

करौदा भूख बढ़ाता है और पित्त को शान्त करता है। प्यास को रोकता है, दस्त को बन्द करता है। पके फल पित्त, रक्त, त्रिदोष और विष तथा वात विनाशक हैं।

अन्य उपयोग

करौदा के फलों का उपयोग सब्जी और अचार बनाने में होता है। इसकी लकड़ी ईंधन की तरह प्रयोग में लाई जाती है। इसके फल की चटनी बनती है।

निष्कर्ष: करौंदा आधारित कृषि वानिकी प्रणाली एक टिकाऊ कृषि मॉडल है, जो किसानों को आर्थिक और पर्यावरणीय लाभ प्रदान करती है। यह प्रणाली न केवल आय बढ़ाने में मदद करती है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और मृदा स्वास्थ्य में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।